

31.0 परिवर्तित परिवेश में किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता का अध्ययन: कारण और निवारण

- अपूर्वा मिश्रा, शोध छात्रा, शिक्षाशास्त्र विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय
Email-apoorvamishra208@gmail.com

शोध-सार

किशोरावस्था एक महत्वपूर्ण विकासात्मक अवस्था है। जीवन के इस काल में विद्यार्थियों में शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक रूप से बहुत से बदलाव आते हैं। ऐसे में निर्णय क्षमता का कमजोर होना विद्यार्थियों के शैक्षिक, व्यक्तिगत और सामाजिक जीवन पर बुरा प्रभाव डालता है। यह शोध पत्र बदलते हुए सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी परिवेश में किशोर विद्यार्थियों की निर्णय-क्षमता को प्रभावित करने वाले विभिन्न कारणों की व्याख्या करता है। प्रस्तुत शोध पत्र में संबन्धित साहित्य के सर्वेक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का विश्लेषण किया गया है। अध्ययन में पाया गया कि डिजिटल युग का प्रभाव, पारिवारिक अपेक्षाएँ, मानसिक तनाव, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और सामाजिक प्रभाव ये ऐसे कुछ कारक हैं जो विद्यार्थियों की निर्णय – क्षमता को प्रभावित करते हैं। इसके अलावा, अध्ययन में कुछ निवारण जैसे कि सोशल मीडिया का संतुलित प्रयोग, पारिवारिक संवाद, शिक्षा व्यवस्था में सुधार, मानसिक परामर्श और भावनात्मक संतुलन इत्यादि सुझाव भी प्रस्तुत किए गए हैं, जिनकी सहायता से विद्यार्थियों में निर्णय – क्षमता कौशल को मजबूत बनाया जा सकता है, जिससे वे स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम हो सकें।

मुख्य शब्द :- निर्णय क्षमता, परिवर्तित परिवेश, किशोर विद्यार्थी

प्रस्तावना

व्यक्ति का सम्पूर्ण जीवन काल विभिन्न अवस्थाओं जैसे शैशवावस्था, बाल्यावस्था, किशोरावस्था एवं प्रौढ़ावस्था में विभाजित होता है। इनमें किशोरावस्था का विशेष महत्व है। किशोरावस्था जीवन का अत्यंत संवेदनशील एवं महत्वपूर्ण समय होता है, जिसमें शारीरिक, मानसिक, संवेगात्मक और सामाजिक दृष्टि से बहुत से क्रांतिकारी परिवर्तन देखने को मिलते हैं, इसलिए स्टेनली हॉल के द्वारा किशोरावस्था को “तूफान एवं तनाव” की अवधि का काल कहा गया है। इस अवधि में किशोरों में समाज एवं परिवार में उचित महत्व और सम्मान पाने की अभिलाषा होने लगती है। वह यह अपेक्षा करते हैं कि उनके साथ बालकों के समान व्यवहार न किया जाए बल्कि वयस्क की तरह सम्मानपूर्वक व्यवहार किया जाए। प्रायः अभिभावक एक तरफ अपने किशोर बच्चों से वयस्क की तरह परिपक्व व्यवहार की उम्मीद करते हैं वहीं दूसरी तरफ बच्चों पर कुछ अंकुश भी लगाते हैं। जिसके परिणामस्वरूप किशोरों में द्वंद की स्थिति पैदा हो जाती है और वे अपनी स्व-पहचान को लेकर दुविधा में रहते हैं। इस अवस्था में विद्यार्थी अपनी सामाजिक एवं पारिवारिक स्थितियों और जिम्मेदारियों को समझने का प्रयास करता है। किशोरावस्था में विद्यार्थियों में मानसिक विकास भी अपनी चरम सीमा पर ही होता है, वह पारिवारिक, सामाजिक, शैक्षिक, व्यक्तिगत जिम्मेदारियों और जटिल मुद्दों पर विचार-विमर्श करना तथा निर्णय लेना शुरू कर देता है। निर्णय लेना एक प्रकार का “कौशल” है, किसी भी कार्य की सफलता के लिए सही निर्णय लेना अत्यंत ही महत्वपूर्ण है। निर्णय लेने की प्रक्रिया में अनेक संभावित समाधानों में से किसी एक सही विकल्प को चुनना ही निर्णयन क्षमता कहलाता है। निर्णय क्षमता हमें तार्किक चिंतन करने में सहायता प्रदान करती है, यह केवल सही या गलत का ही आभास नहीं कराती अपितु समस्या समाधान, आत्म-निरीक्षण एवं व्यक्तिगत क्षमताओं को जानने के साथ ही साथ हमारे द्वारा लिए गए निर्णय से प्राप्त परिणामों से भी अवगत कराती है।

मेनले जोन्स के अनुसार, “निर्णय एक समाधान होता है जो अनेकों विकल्पों की जांच कर चुना जाता है।”

किशोरावस्था में लिए गए निर्णय न केवल वर्तमान को प्रभावित करते हैं, बल्कि भविष्य की दिशा व दशा भी तय करते हैं। जब किशोर किसी भी कारणवश सही निर्णय नहीं ले पाते हैं तो इसका प्रभाव उनके सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यक्तिगत जीवन पर पड़ता

है। वर्तमान समय में बदलते हुए परिवेश अर्थात् सामाजिक, शैक्षिक, तकनीकी बदलाव के कारण विद्यार्थियों के मानसिक विकास, निर्णय क्षमता, ज्ञान एवं उनके अनुभवों पर भी प्रभाव पड़ता है। सोशल मीडिया का बढ़ता हुआ प्रचार व प्रसार सामाजिक मानदंडों में परिवर्तन, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण, तकनीकी क्षेत्र में अत्याधुनिक परिवर्तन, पारिवारिक अपेक्षाएँ, किशोर विद्यार्थियों के मानसिक एवं सांवेगिक विकास को प्रभावित करती है, जिससे उनकी निर्णय लेने की क्षमता कमजोर हो सकती है। निर्णय क्षमता का अभाव होने से किशोरों में आत्म – विश्वास में कमी, मानसिक तनाव और गलत निर्णय लेने जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। इस अध्ययन का लक्ष्य निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों की पहचान करना है और उसके निवारण के लिए किशोर विद्यार्थियों के लिए कुछ सुझाव प्रस्तुत करना है।

शोध प्रश्न

- परिवर्तित परिवेश में किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कौन-कौन से कारक हैं ?
- किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों के निवारण हेतु कौन से उपाय अपनाए जा सकते हैं ?
- किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को उत्कृष्ट बनाने के लिए शिक्षकों और अभिभावकों को क्या युक्तियाँ अपनानी चाहिए?

शोध-उद्देश्य

- बदलते हुए परिवेश में किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन व विश्लेषण करना।
- किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को बेहतर करने के लिए सुझाव प्रस्तुत करना।

शोध प्रविधि

इस शोध पत्र को साहित्य समीक्षा और विषयवस्तु विश्लेषण विधि द्वारा लिखा गया है। जिसके लिए किशोरों में निर्णय क्षमता से सम्बन्धित विभिन्न शोध पत्र, लेख, वेबसाइट एवं पुस्तक का विश्लेषण किया गया है।

किशोरों की निर्णय क्षमता को प्रभावित करने वाले कारक

● डिजिटल युग का प्रभाव

वर्तमान के डिजिटल युग ने किशोर छात्र-छात्राओं का दृष्टिकोण बदल दिया है। वे किसी भी समस्या का त्वरित समाधान चाहते हैं, इंटरनेट के दौर में, विद्यार्थी प्रश्नों के उत्तर के लिए केवल पुस्तकों पर निर्भर नहीं हैं बल्कि प्रश्नों के उत्तर हो या रोजमर्रा जीवन की कुछ परिस्थितियाँ वे हर चीज के समाधान के लिए डिजिटल उपकरणों पर पूर्णतः निर्भर बनते जा रहे हैं। तकनीकी विशेषता – त्वरित समाधान, त्वरित जानकारी किशोरों की निर्णय क्षमता के लिए एक प्रकार का अभिशाप बनती जा रही है क्योंकि इस विशेषता के कारण वे धैर्यपूर्वक निर्णय लेने में अक्षम होते जा रहे हैं। यह उनकी आलोचनात्मक और विश्लेषणात्मक क्षमता को कमजोर करता है। Rose et al.(2022) ने अपने अध्ययन में पाया कि इंटरनेट और तकनीकी नवाचारों के माध्यम से विद्यार्थियों को बहुत सी जानकारी प्राप्त होती है परंतु इंटरनेट की लत, तकनीकी का गलत प्रयोग और आभासी दुनिया एवं इंटरनेट से गलत आदतों को अपनाना आदि यह सब चीजें विद्यार्थियों के मानसिक, सामाजिक एवं शैक्षिक क्षेत्रों को प्रभावित करते हैं।

● प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण और मानसिक तनाव

शिक्षा व्यवस्था में लगातार बढ़ती हुई प्रतिस्पर्धा ने किशोरों को निरंतर अच्छा प्रदर्शन करने का दबाव बना रखा है, इसके कारण उन्हें मानसिक तनाव से जूझना पड़ रहा है। जिसके परिणामस्वरूप उनके मानसिक तनाव का प्रभाव तर्कसंगत सोचने और निर्णय लेने में देखने को मिलता है। मिश्रा (2017) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि बदलते हुए शैक्षिक परिदृश्य और विभिन्न व्यावसायिक विकल्पों के कारण किशोर विद्यार्थियों को करियर संबंधी निर्णय लेने में परेशानी का सामना करना पड़ता है। कभी –

कभी अभिभावकों की अपेक्षाओं के दबाव में ऐसा करियर या विषय चयन कर लेते हैं, जो उनकी रुचि के अनुरूप नहीं होते हैं, जिससे उनमें मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। मानसिक तनाव की स्थिति में विद्यार्थी तत्काल समस्याओं का हल खोजने की कोशिश करते हैं, बिना दीर्घकालिक प्रभाव को देखते हुए, जिसके कारण ऐसे कई निर्णय गलत साबित होते हैं और इससे उनका शैक्षिक प्रदर्शन और आत्म – सम्मान प्रभावित होता है।

● पारिवारिक अपेक्षाएँ

पारिवारिक अपेक्षाएँ अक्सर विद्यार्थियों पर निर्णय लेने के समय दबाव का कारण बनती हैं। किशोरों की निर्णय क्षमता परिवार द्वारा निर्धारित उच्च अपेक्षाओं से बाधित होता है। अभिभावक अक्सर अपने बच्चों से अच्छे प्रदर्शन, एक विशिष्ट सामाजिक छवि बनाए रखने की अपेक्षा करते हैं। इसके कारण वंश विद्यार्थी निर्णय अपनी रुचियों और भावनाओं के अनुसार न लेकर बल्कि पारिवारिक अपेक्षाओं पर खरा उतरने के लिए करते हैं। खत्री और पेरीवाल (2020) ने भी अपने अध्ययन में पाया कि भारतीय किशोरों के निर्णयों पर परिवार के सदस्यों का नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों ही प्रभाव देखने को मिलता है, पारिवारिक प्रोत्साहन निर्णय क्षमता को बढ़ावा प्रदान करता है और किशोरों में आत्म – विश्वास को विकसित करता है जबकि माता – पिता की उच्च-अपेक्षाएँ एवं दबाव विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और उनके स्वतंत्र निर्णय लेने की क्षमता को प्रभावित करता है।

● सामाजिक प्रभाव

किशोरावस्था में विद्यार्थियों के लिए उनके साथी समूह के विचार तथा राय अत्यंत महत्वपूर्ण होती है, जिसके फलस्वरूप वे साथियों के विचारों में सहमति प्रदान करने के कारण वे स्वतंत्र रूप से निर्णय नहीं ले पाते। उनपर संगी साथी समूह के विचारों का और सामाजिक दबाव बना रहता है। Felsher-Halpern (2011) का कहना है, मित्र समूहों का प्रभाव, सामाजिक मान्यताओं, एवं सामाजिक उत्तरदायित्वों, पारिवारिक दबाव इत्यादि किशोरों के निर्णय क्षमता को प्रभावित करते हैं। किशोर बहुत बार साथियों की हाँ में हाँ मिलाने के कारण अपनी स्वतंत्र सोच को दबा देते हैं। यह सामाजिक प्रभाव उनके निर्णय लेने की क्षमता को कमजोर कर सकता है, विशेषकर तब जब वे अपने निर्णय में स्वायत्ता अनुभव नहीं करते।

निवारण

● मानसिक परामर्श और भावनात्मक संतुलन

कोई भी निर्णय लेते वक्त यह जरूरी है कि विद्यार्थी अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखें। भावनाओं में बहकर किसी भी प्रकार का निर्णय अलाभकारी साबित हो सकता है। मानसिक स्वास्थ्य कार्यक्रम जैसे योग, मेडिटेशन आदि के द्वारा किशोरों को तनाव प्रबंधन और आत्म-विश्वास बढ़ाने की तकनीकें सिखायी जानी चाहिए। पांडे (2021) ने अपने शोध अध्ययन में किशोरों के मानसिक स्वस्थता एवं संवेगात्मक रूप से संतुलित होने को महत्व दिया, जिससे वे तनावपूर्ण स्थिति में भी उचित निर्णय ले सकें। निर्णय लेते समय भावनात्मक रूप से संतुलित रहना अत्यंत आवश्यक है।

● शिक्षा व्यवस्था में सुधार

शिक्षा व्यवस्था में दिनोंदिन बढ़ती जा रही प्रतिस्पर्धा को कम करने और विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य एवं विकास पर ध्यान देने की जरूरत है। विद्यार्थियों को उनकी रुचियों और क्षमतानुसार शिक्षा और करियर संबंधी निर्णय लेना चाहिए। शिक्षकों एवं अभिभावकों को किशोरों को समय-समय पर निर्णय क्षमता कौशल को बढ़ाने के लिए मार्गदर्शन प्रदान करना चाहिए साथ ही साथ विद्यार्थियों को मौलिक चिंतन करने के अवसर प्रदान करने चाहिए न कि पहले से निर्धारित अनुदेशन के द्वारा ही कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए। दानी & देसाई (2018) के अनुसार माता-पिता और शिक्षकों द्वारा उचित मार्गदर्शन, सकारात्मक सोच के विकास में प्रेरणा देना आदि से किशोर विद्यार्थियों की निर्णय क्षमता को बेहतर किया जा सकता है।

● सोशल मीडिया का संतुलित उपयोग

वर्तमान समय में किशोरों में किसी परिस्थिति के बारे में कोई दृष्टिकोण बनाने में सोशल मीडिया का बड़ा हाथ होता है। कुमार (2018) ने अपने अध्ययन में पाया कि सोशल मीडिया पर मिलने वाली बहुत सी जानकारी निर्णय लेने में भ्रम पैदा करती है। विद्यार्थी भी अक्सर इस सूचनाओं के जाल में फँसते चले जाते हैं तथा वे सही और गलत निर्णय में स्पष्ट अंतर नहीं कर पाते हैं। इंटरनेट और सोशल मीडिया का सीमित उपयोग करने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित करना चाहिए। मीडिया के संतुलित उपयोग के द्वारा विद्यार्थी किसी भी घटना के संबंध में अपनी स्वतंत्र राय बना पाएंगे और उचित निर्णय ले पाएंगे।

● संवाद एवं सहायता

माता-पिता को अपने निर्णय बच्चों पर थोपने नहीं चाहिए बल्कि विद्यार्थियों को स्वयं निर्णय लेने के लिए सहायता प्रदान करनी चाहिए और उन्हें प्रोत्साहित करना चाहिए। बच्चों को अपने विचारों को स्वतंत्र रूप से बताने के लिए अभिभावकों और शिक्षकों द्वारा बच्चों का मनोबल बढ़ाना चाहिए। किसी भी परिस्थिति में निर्णय लेने के कारण अभिभावक और बच्चों के मध्य संघर्ष की संभावना हो तो, अपने विचारों को जबरदस्ती थोपने के बजाय आपसी संवाद करना चाहिए, जिससे विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास और निर्णय क्षमता में सुधार होगा। अभिभावकों को किशोरों पर अनावश्यक नियंत्रण नहीं रखना चाहिए बल्कि उन्हें अपने कार्यों को करने की स्वतन्त्रता प्रदान करनी चाहिए जिसका पूरा उत्तरदायित्व एवं ज़िम्मेदारी स्वयं किशोरों की ही हो, जिससे वे अपने निर्णय क्षमता का आकलन भी कर सकेंगे और भविष्य में बेहतर निर्णय ले सकेंगे।

निष्कर्ष

किशोरावस्था, वह अवस्था है जब व्यक्ति अपनी पहचान बनाने और जीवन में अपने उद्देश्यों की प्राप्ति के लिए तत्पर रहता है और उसे बहुत से महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ते हैं। यह समय उसकी निर्णय क्षमता को विकसित करने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। निर्णय क्षमता केवल एक कौशल ही नहीं है वरन् जीवन को सफल बनाने में अत्यंत महत्वपूर्ण घटक है क्योंकि एक सही निर्णय से व्यक्ति उन्नति करता है लेकिन अगर निर्णय लेने में कहीं चूक हो जाए तो वह हमारे पतन का कारण भी बन सकता है, इसलिए किशोर विद्यार्थियों में सशक्त निर्णय कौशल को विकसित करने के प्रभावी प्रयास करने चाहिए जिससे विद्यार्थी भरपूर आत्म-विश्वास के साथ समस्याओं के समाधान करने और आत्म निर्भर होकर विभिन्न विकल्पों में से सही और गलत का अनुमान लगा सके और सही विकल्प को चयन कर सके। बदलते परिवेश में किशोर विद्यार्थियों की निर्णय-क्षमता सामाजिक, शैक्षिक और तकनीकी कारकों से प्रभावित होती है। ये कारक विद्यार्थियों के मानसिक स्वास्थ्य और संवेगात्मक स्थिरता के हास में योगदान देते हैं, जिससे उनकी निर्णय क्षमता और तर्कसंगत सोच कमजोर होती है। प्रस्तुत अध्ययन में सुझाए गए समाधान इन समस्याओं को बहुत सीमा तक हल कर सकते हैं जिसके परिणामस्वरूप विद्यार्थी स्वतंत्र रूप से निर्णय लेने में सक्षम हो सकते हैं।

शोधार्थी द्वारा अन्य सुझाव

- विद्यालयों द्वारा समसमय पर ऐसे कार्यक्रम आयोजित करने चाहिए जिसमें छात्रों को स्वतः निर्णय लेने की आवश्यकता हो।
- सोशल मीडिया के संतुलित उपयोग हेतु घर में अभिभावकों को प्रत्येक दिन बच्चों को कुछ घंटे बिना मोबाइल फोन, लैपटॉप, कम्प्यूटर, टैबलेट इत्यादि के उपयोग के बिना व्यतीत करवाने का प्रयास करवाएँ।
- माता – पिता को अपने बच्चों को रोजमर्रा जीवन के निर्णय लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।
- अभिभावकों को अपने बच्चों के साथ संवाद करना चाहिए और वार्तालाप के दौरान ही निर्णय लेने के लिए बच्चों का मनोबल बढ़ाना चाहिए।
- शिक्षकों को विद्यार्थियों में सकारात्मक जोखिम लेने के लिए बढ़ावा देना चाहिए।

संदर्भ

- सिक्स वेज टू इम्प्रूव योर डिसिशन मेकिंग.(एन.डी.).द आर्ट ऑफ लिविंग.<https://www.artofliving.org/in-en/6-ways-improve-your-decision-making>
- एमपावरिंग स्टूडेंट्स विद इफेक्टिव डिसीजन-मेकिंग स्किल्स:अ हाउ टु गाइड.(एन.डी.), पॉजिटिव - एक्शन .
<https://www.positiveaction.net/blog/empowering-students-with-effective-decision-making-skills>
- सर्वा , एल . एस., एवं मिश्रा , एम . डॉ . (2024).उच्च माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत विद्यार्थियों के संकाय के आधार पर समस्या समाधान योग्यता तथा निर्णय क्षमता का तुलनात्मक अध्ययन .*जर्नल ऑफ एमेर्जिंग टेक्नोलोजीस एंड इनोवैटिव रिसर्च* ,11(1),24-28. <https://www.jetir.org/papers/JETIR2401305.pdf>
- अनुप्रीत , एवं कौर .डॉ.एस.(2022).इम्पैक्ट ऑफ पैंटल एनकरेजमेंट ऑन करियर डिसिशन – मेकिंग एंड सेल्फ कान्सेप्ट ऑफ एडोलसेंट .*जर्नल ऑफ एमेर्जिंग टेक्नोलोजीस एंड इनोवैटिव रिसर्च* ,9(5),858-866.
- खत्री ,ई., एवं पेरीवाल,वी .(2020).स्टडी ऑफ इंप्लुएंस बाइ फ़ैमिली ऑन करियर डिसीजन ऑफ इंडियन मैनेजमेंट स्टूडेंट्स.*इंटरनेशनल जर्नल ऑफ क्रेयटिव रिसर्च थौट्स*,8(11),2848-2853.
- कुमार , अ. (2018). सोशल मीडिया का किशोरों की निर्णय क्षमता पर प्रभाव . *भारतीय मनोविज्ञान पत्रिका* ,45(2),234-240.
- मिश्रा, जे . (2017). किशोरावस्था में शैक्षिक निर्णय लेना . *भारतीय जर्नल ऑफ एजुकेशनल रिसर्च* ,12(4),78-85.
- रोज़, एन.एन., इशाक, ए.एस., सुल्तान, एन.एच.एच., इस्माइल, एफ., और फ़हरुद्दीन, ए. (2022).किशोरों पर डिजिटल तकनीक का प्रभाव. *किशोरों के जीवन में डिजिटल तकनीकों का प्रभाव और भूमिका* (पृष्ठ 1-18). आई.जी.आई. ग्लोबल।
- हैल्पर्न-फ़ेलशर,बी.(2009). एडोलसेंट डिसिजन्स मेकिंग:ऐन ओवरव्यू.द प्रिवेंशन रिसर्च , 16 (2),3+<https://link.gale.com/apps/doc/A198715069/HRC?u=anon~e03bb245&sid=googleScholar&xid=c1eb2f29>
- दानी, पी., एवं देसाई, एच. (2018).माध्यमिक विद्यालय के छात्रों के करियर निर्णय लेने को प्रभावित करने वाले कारक. *इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंडियन साइकोलॉजी* , 6 (3), 176 , 187 .